॥ श्रीः ॥

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

१२६

॥ श्रीः ॥

शिवताण्डवस्तोत्रम्

'सर्वमङ्गला'नामकभाषाटीकासहितम्

प्रकाशकः—

जयकृष्णदास हरिदासगुप्तः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस,

विद्याविलास प्रेस, बनारस सिटी।

वि. सं. १९९७]   [सन् १९४०

THE

HARIDĀS SANSKRIT SERIES
126.

S'IVATĀNDAVA STOTRA
OF RĀVAṆA

WITH

Sarvamangalā Hindi Commentary by

Pt. S'RĪ VIS'VES'VARA JHĀ

रावणकृत—

शिवताण्डवस्तोत्रम् ।

पण्डित श्रीविश्वेश्वरझाकृतसर्वमङ्गलानामक-
हिन्दीटीकासहितम् ।

PUBLISHED BY

JAYA KRISHNA DĀS HARIDĀS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office,

Benares City.

1940

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः ।

अथ रावणकृत—

शिवताण्डवस्तोत्रम्

चन्द्रमौलिं नमस्कृत्य भक्तदुःखापहारिणम् ।
पौलस्त्यस्य कृतेः कुर्वे भाषाटीकां मनोहराम् ॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ १ ॥

'सर्वमङ्गला' नामक भाषाटीका—

जटारूपी कड़ाहमें घूमती हुई गङ्गाकी चञ्चल तरङ्ग रूपी लता-ओंसे शोभायमान और जिनके मस्तकमें धक् धक् शब्द करती हुई अत्यन्त प्रज्वलित अग्नि-शिखा तथा द्वितीया के चन्द्रमारूपी आभूषण विराजमान है ऐसे श्रीशङ्करजीमें प्रतिक्षण मेरी प्रीति बना रहे ॥ १ ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं,
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥२॥

जिन्होने जटारूपी वनसे गिरते हुए जलके प्रवाहसे पवित्र कण्ठमें बड़े बड़े सर्पोंकी मालाको पहनकर डमड् डमड् आवाजयुक्त डमरू बजाते हुए प्रचण्ड ताण्डव नृत्य किया था। ऐसे श्रीशङ्करजी हमलोगोंका कल्याण करें ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

गिरिराज हिमालयकी कन्या पार्वतीके केलिक्रीड़ाके सहचर और अति रमणीय देदीप्यमान कृपाकटाक्षोंसे संसारके कठिनसे कठिन आपत्तियोंको दूरकरनेवाले दिगम्बर श्रीशङ्करजीमें मेरा मन आनन्दित हो ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

जटाओंमें रहनेवाले सर्पोंके पीली चमकती हुई फणामणिकी कान्तिरूपी कुङ्कुमद्रव (केशर) से रंगदिया है दिशा रूपी वनिताके मुखको जिसने तथा मतवाला गजासुरके चमकीले चर्मके ओढनेसे सुशोभित है शरीर जिनका ऐसे श्रीशङ्करजीमें मेरामन रमित हो ॥४॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्
महाकपालिसम्पदे सिरो जटालमस्तु नः ॥ ५ ॥

जिन्होने अपने मस्तक प्रदेशके प्रज्वलित अग्निकणसे कन्दर्प को भस्म करदिया और जो स्वर्ग सम्राट भगवान इन्द्रका भी पूजनीय हैं तथा जिनका विशाल मस्तक चन्द्रमाकी शुभ्र कला-पंक्तिसे सुशोभित है एवं जिनके जटामें सर्वदुःख हारिणी श्रीगंगाजी वास करती हैं ऐसे कपालधारी तेजःस्वरूप श्रीमहादेवजी हमें सब सम्पत्ति (धर्म अर्थ काम मोक्ष) दें ॥ ५ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ॥ ६ ॥

इन्द्रादि सब देवताओंके मुकुटोंकी पुष्पमालाओंसे गिरेहुये पुष्पपरागोंसे लिप्तहोगयाहै चरणपीठ जिनका और सर्पराज वासुकीके लपेटोंसे बन्धगये हैं जटाजूट जिनके ऐसे चन्द्रमौलि (शङ्कर) जी बहुत काल तक हमलोगों का कल्याण करें ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥

विशाल मस्तक प्रदेशके धक् धक् जलती हुई अग्निमें आहुति करदिया है उद्दण्ड कन्दर्पको जिसने और हिमालय की पुत्री श्रीपार्वतीजीके स्तनोंपर चित्र बनानेमें चतुर हैं जो ऐसे त्रिनेत्र श्रीशङ्करजीमें मेरी प्रीति बना रहे ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

नवीन मेघमण्डलीके घिर आनेसे अमावास्याके आधीरातके घोर अन्धकारसे भी काली है ग्रीवा जिनकी ऐसे तथा सुरसरितको धारण करने वाले तथा गजचर्मसे सुशोभित त्रैलोक्यरक्षक श्रीचन्द्रमौलिजी हमें सब सम्पत्ति दें ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

खिले हुए नील कमल की श्यामलताके प्रभावलम्बी कण्ठकन्दलीके कान्ति से बद्ध है ग्रीवा जिनके ऐसे कामदेवको भस्म करने वाले, त्रिपुरासुर संहारी, दक्षयज्ञविध्वंसकारी, गजासुरनाशकारी, अन्धकासुरनाशक, संसारदुःखनाशक, कालान्तक श्रीशिवजीको मैं भजन करता हूँ ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

सब प्रकारके मङ्गलोंको विशेषरूपसे देनेवाले चौसठो कला रूपी कदम्ब वृक्षकी मञ्जरीका रस प्रवाहकी मधुरताको पीनेमें भ्रमररूप (अर्थात् सभीकलाओंको जानने में प्रवीण) कन्दर्पारि, त्रिपुरारि, भवदुःखापहारि, दक्षप्रजापतियज्ञ-विध्वंस कारक गजासुरविदारक, यमान्तक, श्रीशङ्करजीको मैं भजन करताहूँ ॥ १० ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्-
विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिन्धिमिन्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

अत्यन्त वेगसे घूमनेवाले (शिरमें लिपटे हुए) सर्पोंके श्वास निकलनेसे अधिक प्रज्वलित होगई है विशाल भालकी अग्नि जिनकी तथा धिमि धिमि धिमि मङ्गलयुक्त शब्द करनेवाले मृदङ्ग ध्वनिके क्रमसे प्रचण्ड ताण्डव नृत्यको प्रारम्भ करनेवाले शिवजीकी जय हो ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

वह कब शुभ अवसर आयगा जब कि मैं पत्थर और नानाप्रकारके फूलोंकी शय्यामें, सर्प और मोतिओंकी मालामें, बहुमूल्यरत्न और मिट्टीके ढेलों में, मित्र और दुश्मनोंमें, तृण और कमलसमान नेत्रवाली वनिताओंमें, तथा प्रजा और चक्रवर्ती राजाओंमें, एकसी दृष्टि रखकर श्रीसदाशिवजी का भजन करूँगा ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

कब ऐसा शुभ दिन होगा जब कि मैं समस्त दुर्वासना से रहित होकर गंगातटके एकान्त स्थानमें वास करके शिरपर अञ्जलि रख

प्रणामकरता हुआ अत्यन्त चञ्चलनेत्रवाली वनितारत्न श्रीपार्वतीजी को भी प्रारब्धवश प्राप्त हुए 'शिव शिव' इस मन्त्रको उच्चारण करताहुआ निरन्तर सुखी रहूँगा ॥ १३ ॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियःपरपदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः ॥ १४ ॥

इन्द्रनगरीके अप्सराओंके शिरमें लगे हुए वेलाफूलों को गुच्छा-ओंसे गिरे हुपे परागकी उष्णतासे उत्पन्न हुए पसीनेसे शोभायमान, परमश्रीका परमस्थान और दिन रात आनन्द देने वाला श्रीशङ्कर जीके शरीरके तेजस्समूह हमारे मनके आनन्दको बढावें ॥ १४ ॥

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनि
शिवेतिमन्त्रभूषणाजगज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

भयानक बड़वानल अग्निके समान प्रभावाली अमङ्गलोंका नाश करनेवाली और महा अणिमादि अष्टसिद्धियां सहित क्रीड़ाकुशल स्त्रियां गाती हैं गीत जिसमें और 'शिव' यह मन्त्र हीहै भूषण जिसका ऐसी स्वयं मुक्तस्वभाव सुन्दर नेत्रवाली जगज्जननी पार्वतीजीके विवाह समयकी ध्वनि जगतके लिए जयकारिणी हो ॥ १५ ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम् ॥१६॥

प्रति दिन जो कोई इस (शिवताण्डव) महास्तोत्रको भक्ति-पुरःशर पाठ करते हुए शङ्कर जी की पूजा करते हैं वे सभी दुःखसे रहित होकर परम पदको प्राप्त होते हैं ॥ १६ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १७ ॥

जो कोई प्रदोष कालीन शङ्कर जी की पूजाके अवसान समयमें रावणका बनाया हुआ इस स्तोत्रका पाठ करते हैं उनको श्रीशङ्करजी रथ, हाथी, घोड़े आदि राजचिन्हसे युक्त अचल लक्ष्मी (सम्पत्ति) प्रदान करते हैं ॥ १७ ॥

इति पण्डित श्रीविश्वेश्वरझा कृत शिवताण्डवस्तोत्रकी सर्वमंगला नामक भाषा टीका समाप्त हुई ।

प्राप्तिस्थानम्—
चौखम्बा-संस्कृत-पुस्तकालय,
बनारस सिटी ।

Printed at the Vidya Vilas Press, Benares. 1940

प्रकाशित हो गया ! प्रकाशित हो गया !

वेणीसंहारनाटकम्-

'प्रबोधिनी'-'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेतम् ।

गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज बनारस, के शास्त्री प्रथम खण्ड में तथा कलकत्ते के साहित्य उपाधिपरीक्षा द्वितीय पत्र में निर्धारित यह 'वेणीसंहार" का नूतन संस्करण परीक्षार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी हुआ है ।

अब तक इस नाटक के ऊपर परीक्षार्थियों के उपयुक्त इस तरह की विस्तृत और सरल कोई व्याख्या नहीं हुई थी । परीक्षा में आये हुए प्रश्नों का समीचीन उत्तर देने में कोमलमति वाले परीक्षार्थियों की अत्यन्त कठिनाइयों को देखकर ही हमारे इस ग्रन्थके टीकाकारों ने सभी नवीन व प्राचीन प्रकाशित टीकाओं का गुण-दोष विवेचन करके नाटकीय व्याख्या के ढङ्ग पर श्लोकान्वय, विग्रह, पर्याय, सुन्दर अर्थ, भावार्थ, अलङ्कार तथा कोषादि प्रमाण से शब्दान्तर देकर समन्वय करते हुए प्रबोधिनी और प्रकाश (संस्कृत-हिन्दी) टीकाओं से, श्लोक, प्राकृत तथा गद्य को इस तरह समझाया है कि, शास्त्री क्या मध्यमा के सुकोमल विद्यार्थी भी स्वयं इससे ज्ञान प्राप्त कर सके हैं । इसमें प्रत्येक पात्र का लक्षण तथा नाटक, चम्पू, काव्य और महाकाव्य आदि का लक्षण भी जगह २ पर दे दिया गया है जो कि आजतक किसी भी अन्य संस्करणों में नहीं पाया जाता । इतनाही नहीं विस्तृत 'भूमिका' में सम्पूर्ण ग्रन्थ की समालोचना कर के सभी अङ्क का संक्षिप्त 'कथासार' भी अलग लिख दिया गया है, जिससे संक्षेप में इस ग्रन्थ का कथानक समझने में बड़ी सुगमता हो गई है । किं बहुना, जिन स्थलों पर अन्य टीकाकारों ने ग्रन्थाशय न समझ कर मन गढन्त पाठ और टीका कर दी है उन स्थलों का भलि भांति सप्रमाण विस्तृत रूपसे 'कविवर-भट्टनारायण' के यथार्थ आशय का वर्णन कर के समन्वय किया गया है ।

'हाथ कंगन को आरसी क्या' हमारा नम्र निवेदन है कि वेणीसंहार खरीदने के पूर्व इन प्रबोधिनी और प्रकाश टीकाओं को देख कर ही आप पुस्तक खरीदने का कष्ट करें अन्यथा बाद पश्चाताप से क्या लाभ होगा ।

मूल्य भी बहुत अल्प १।) मात्र

प्राप्तिस्थानम्—

चौखम्बा-संस्कृत-पुस्तकालय, बनारस सिटी ।